भाषा - पीयूष

समाचार पत्र की पंजीयन...

वर्ष VIII अंक 4

15 मार्च 2020

सर्वज्ञ तदहंवन्दे परंज्योतिस्तमोपहम प्रवृत्ता यन्मुखाद्देवी सर्वभाषा सरस्वती ।

महा शिवरात्रि

कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति की त्रैमासिक मुखपत्रिका ।

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce

हुए, लेकिन उनके अनुशासन के डर से तुरंत औजार उठाते हुए काम में मशगूल हुए। इंजीनियर सीधे मेरे पास आए और चाबी देकर बोलने लगे, ' गाडी अच्छी है; जरूरी काम था, किसी दूकान जाना था। दूकान दूर होने के कारण देर हुई।''

''ठीक है साब, काई बात नहीं।'' मैं गद्‌गद् हो गया था।

'' अरे सुनना डिग्गी में बॉक्स हैं, खोलकर सभी को देना और शाम छः बजे लौटूँगा तो मेरे लिए भी रखना। समझे ?''

तभी उनके कार ड्राइवर ने कार स्टार्ट की और इंजीनियर उसमें बैठकर चले गए। काँपते हुए मैंने मेरी टू-व्हीलर की चाबी ली और डिग्गी खोलते ही चकित रह गये। एक बुके के साथ चिट्ठी मिली, जिसमें लिखा गया था, ' सतीश, तुमने पाई -पाई जोड़कर गाड़ी खरीदी और वह भी नगद रूप से । दूसरे मजदूरों की तरह कही बैंक या फाइनान्स से कर्ज न लेकर । तुम्हार अभिनंदन''।

अब तो मेरे लिए इंजिनियर ने अलग ही पहचान बनाई थी। गाड़ी मेरी और मिठाई उनकी ।

बलिदान

-श्रीमती संध्या दत्ता कदम

वतन पर जान कुर्बान करेंगे, माता भारती की शान बचायेंगे
बहादूरी आगे बढ़ते जाना, दुश्मनों को मिटा देना।
लहू बिछाये महाता का मान बढाते जाना
गद्दार न घुसपैट करे, न सरहद पार करे
उने चुन-चुनकर मारे, फिर कभी न निहारे
अपने गुलिस्थान पर नाज करना
अमन चयन से जीते रहने
कश्मिर हमारा स्वर्ग है, आतंक कैसे फैलाएगा ?
कहा नहीं सुनेगा तो, गोली खाकर मरेगा।
हर सितम झेलकर भी माँ तुझे हम बचायेंगे
सुरक्षा तेरी करते करते, खुद की जान मिटा देंगे।
दुश्मनों की मुंड उढायेंगे, तेरे चरनों में चढाएँगे।
लाख बाधा आने पर भी हम तुझे सजायेंगे।
नादिर कितना होशियार रहे हम उसे मिटायेंगे।
हर पल तेरी याद में, हम अपनों से छुट जायेंगे।
गम नहीं खुद मिटने से, हम कहेंगे अभिमान से
भारत माता अमर रहे बीरों की बलिदार से। *

प्रहरी

-श्रीमती डॉ. पुष्पाराव

सरहद पर बैठा अकेला प्रहरी
इस तन्हाई में साथ है उसकी यादें घनेरी
याद आ रहे हैं माँ के वे आँसू
बाप का मुरझाया सा चेहरा
घूंघट के आड में उदास नया चेहरा
चंद बातें वादें और रातें जो गुजारे
फिर भी गर्व से सीनाताना
देश का जो ठहरा वह प्रहरी।
नादान ये नहीं जानता
देश को सरहद के उसपार से नहीं खतरा उतना
देश के नेता, अफसर आतंकवादियों से जितना
करवाकर दंगे मरवाकर लोगों को ये नेता
कर रहे हैं कुर्सी पक्की, भर रहे हैं झोलियां अपनी।
कभी सोचता है भरकर आँखों में आँसू
शायद लौटेगा तिरंगा ओढे जिस दिन अपने घर
सूखेंगे माँ के आँसू कहेंगे मुझको था गर्व उस पर
आज सारा देश कर रहा है गर्व उस पर
शहीद कभी मरते नहीं ,हो जाते हैं अमर ।
सरहद पर बैठा अकेला प्रहरी।। **